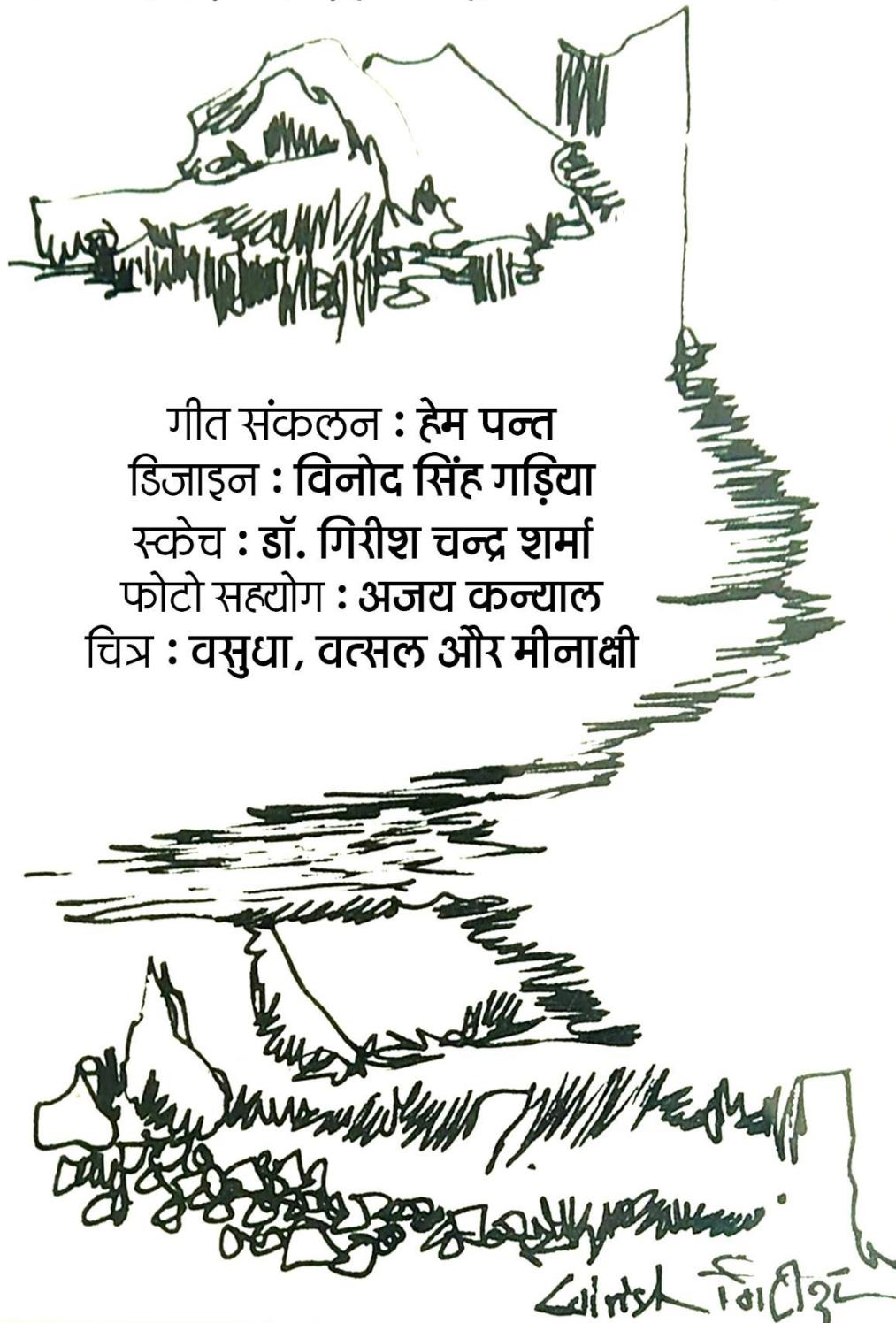


# धुधूति बासूति

भाग-1 ( कुमाऊँनी )

उत्तराखण्ड के पारंपरिक बालगीतों का संकलन  
( लोरी, पर्वगीत, कीड़ागीत, पढ़ई-लिरवाई, आंण एवं आशीर्वचन )



गीत संकलन : हेम पन्त

डिजाइन : विनोद सिंह गड़िया

स्क्रेच : डॉ. गिरीश चन्द्र शर्मा

फोटो सहयोग : अजय कन्याल

चित्र : वसुधा, वत्सल और मीनाक्षी

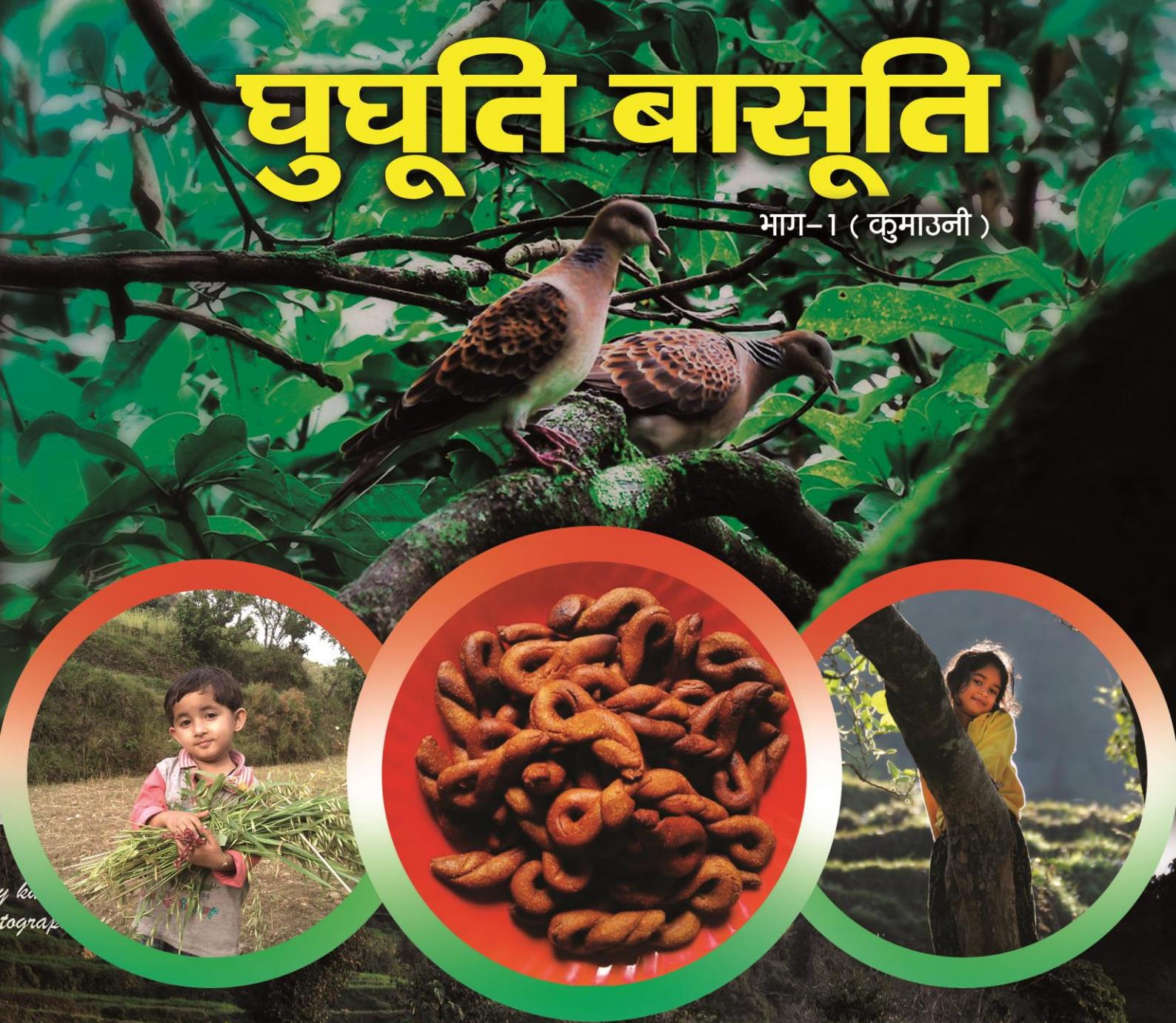
वसुधा, वत्सल, मीनाक्षी, मर्यांक, गुंजन, दिव्यांशी, नमन  
और उनके सभी दोस्तों के लिए ।



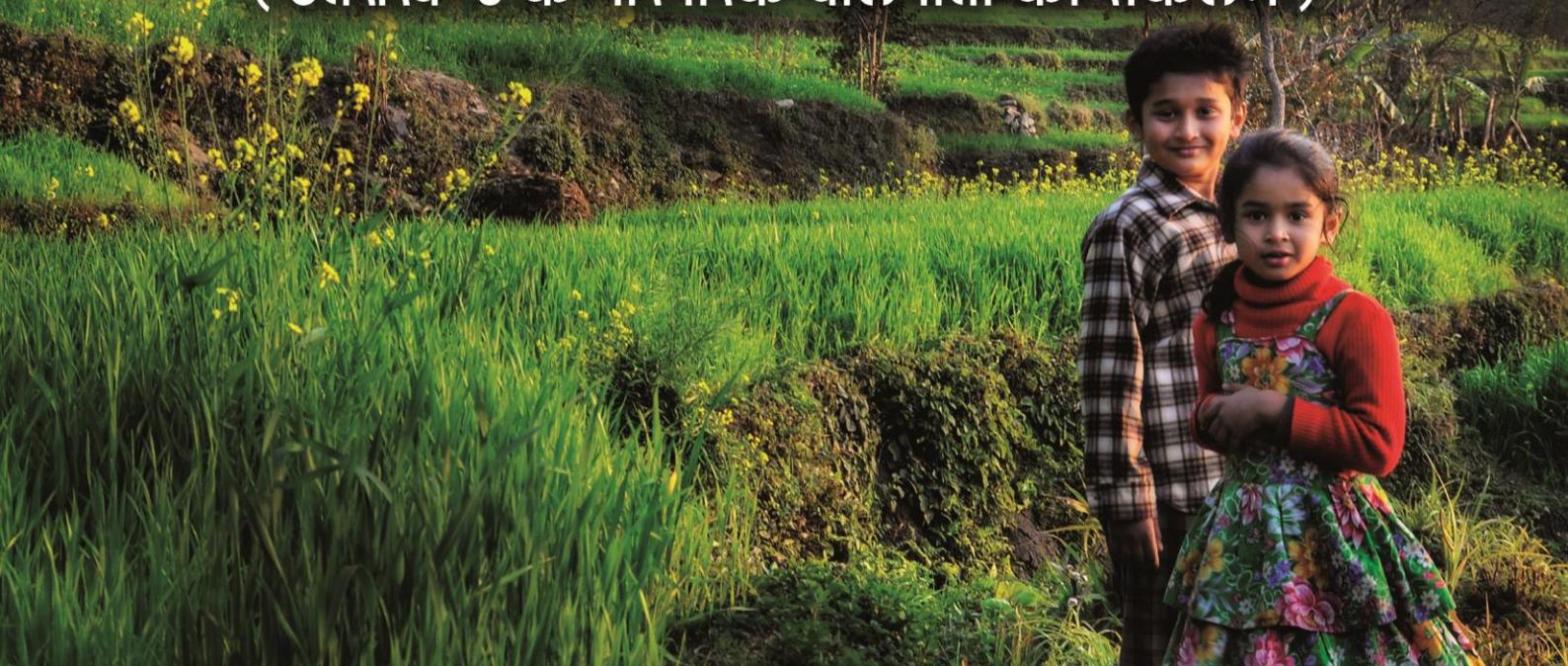
CREATIVE UTTARAKHAND  
"Spreading Culture to the Next Generation"

# घुघूति बासूति

भाग-1 ( कुमाऊँनी )



( उत्तराखण्ड के पारंपरिक बालगीतों का संकलन )



संकलन : हेम पन्त

डिजाइन : विनोद सिंह गड्ढिया

## अपनी बात

बालगीत हम सबके शुरूआती जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं। लोरी में घुला लाड़-प्यार, त्यौहार के गीतों में रचे-बसे संस्कार और बाल सखाओं के साथ खेल-खेल में गाये गए गीतों का उत्साह आजीवन हमारे साथ बना रहता है।

मेरी यादों में बसे ऐसे ही कुछ पारंपरिक बालगीत अपने दोनों बच्चों के साथ गुनगुनाते हुए मुझे महसूस हुआ कि इन गीतों को संकलित किया जाना चाहिए। फेसबुक के गुप ‘‘कुमाऊनी शब्द सम्पदा’’ में साथियों ने कुछ बालगीत उपलब्ध करवाए, उसके बाद मैंने विभिन्न स्रोतों से गढ़वाली-कुमाऊनी बोली के लगभग 70 बालगीत एकत्रित किए। मुझे लगता है कि यह इस काम की सिफर शुरूआत भर है, अभी हजारों ऐसे पारंपरिक बालगीत लोगों की स्मृतियों में जीवित हैं जिन्हें संरक्षित किया जाना है। पहाड़ी इलाके में पारंपरिक खेल भी थे, जो बच्चों रचनात्मक शारीरिक-मानसिक विकास के लिए जरूरी थे, वो भी समय के साथ भुला दिए गए हैं।

इस E-book में संकलित उत्तराखण्ड के पारंपरिक बालगीतों से गुजरते हुए आपको महसूस होगा कि गीतों के माध्यम से बच्चों को अपने परिवेश, समाज, पर्यावरण और रघेती-पशुपालन की जानकारी बड़ी सरलता से मिल जाती है। इन पारंपरिक बालगीतों की विषय-वस्तु की व्यापकता, रचनाशीलता और बच्चों के चारित्रिक विकास में इन गीतों की भूमिका एक गहन शोध का विषय हो सकता है।

बहुत से साथियों ने इन पारंपरिक बालगीतों के संकलन में योगदान दिया, मैं उन सबका आभारी हूँ। इसी संकलन से ‘‘हल्लोरी’’ गीत लेकर कमल जोशी और हमारे अन्य साथियों ने मिलकर एक सार्थक लघु फिल्म बनाई, यह फिल्म YouTube पर उपलब्ध है। भाई विनोद गड़िया ने डिजाइन की जिम्मेदारी ली और इस E-book को सुन्दर रूप दिया, उनका भी धन्यवाद।

सांस्कृतिक-सामाजिक संस्था ‘‘क्रिएटिव उत्तराखण्ड’’ का हमेशा प्रयास रहा है कि हमारी समृद्ध विरासत आने वाली पीढ़ियों तक सही रूप में हस्तांतरित होती रहे। उम्मीद है कि इस तकनीकी युग में E-book के माध्यम से अपनी जड़ों से जुड़े रहने की यह कोशिश आप अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाएंगे, खासतौर से बच्चों तक।

‘‘घुघूति बासूति – भाग 2’’ भी कुछ समय बाद आप सबके बीच होगा जिसमें गढ़वाल अंचल के पारंपरिक बालगीत होंगे।

हमें आपकी प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

( हेम पन्त )

ईमेल : [hempantt@gmail.com](mailto:hempantt@gmail.com)



मेरा बचपन उत्तराखण्ड के सुदूरवर्ती अंचल में बीता है। घुघूती बासूति जैसे बालगीत हों या काले कौआ काले, फूलदेई छम्मा देई जैसे पर्वगीत, बचपन में गाए ये गीत मस्तिष्क पटल पर आज भी मौजूद हैं। यहाँ मैंने अपने बचपन को जी भर कर जिया है। अक्सर माँ को छोटे भाई को लोरियां गाकर सुलाते हुए देखा है। आज जब इस E-book को डिजाइन करते हुए ये लोरियां, पर्वगीत, आँण पढ़ने को मिली तो बचपन की वो सम्पूर्ण यादें तरोताजा हो गईं। माँ, दीदी, नानी के साथ बिताये वो ठंडी रातें याद आने लगी जब हम एक दूसरे से आँण पूछते थे और सही उत्तर न बता पाने पर 'आँण लाग' जैसे भारी भरकम शब्द के बोझ/कर्ज को सहते थे। बाल सखाओं के साथ गाए घुघुतिया और फूलदेई के गीत एक बार बचपन की ओर लेकर गईं।

अपनी कड़ी मेहनत और लगन से एकत्रित किये गए इन बाल गीतों को भावी पीढ़ी के लिए संरक्षित करने के लिए श्री हेम पन्त जी द्वारा जब E-book बनाने के लिए मेरे सहयोग की बात कही, तो मैंने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। लेकिन मेरे सामने बहुत सी चुनौतियाँ थीं। मैं न तो पेशेवर ग्राफिक्स डिजाइनर हूँ और न मुझे इस तरह के कार्य करने का अनुभव हैं। शौकिया तौर पर जो भी मुझे बनाना आता है, मैंने अपना पूरा योगदान देने की कोशिश की है। कोरोना लॉकडाउन के अनिश्चितता भरे इस समय में मिले लम्बे विराम का इस E-book से अच्छा और क्या सदुपयोग हो सकता था। बच्चों द्वारा कल्पना की उड़ान भरते हुए उन्मुक्त मन से बनाए गए सहज-सरल चित्रों को प्रयोग करने से मेरा काम कुछ हद तक आसान बन गया और रोचक भी।

इस E-book को रूप देते हुए महसूस किया है यह एक E-book नहीं बल्कि बचपन है। अक्सर लोगों को कहते हुए सुना है 'कोई लौटा दे मेरा बचपन'। तो इस E-book को पढ़कर, देखकर महसूस कीजिये अपना बचपन। साथ ही आज के उन नन्हें बच्चों तक भी पहुंचायें ये लोरियां, पर्वगीत, कीड़ागीत ताकि वे भी अपने अंचल की माटी में रचे-बसे संस्कारों को ग्रहण कर सकें। मुझे विश्वास है कि यह E-book बच्चों में 'दुदबोली के संस्कार' पैदा करने में सफल होगी।

**सादर**

**विनोद सिंह गड़िया**

gariya2010@gmail.com



1

## लोरी

हल्लोरि बाला हल्लोरि, हल्लोरि बाबा हल्लोरि  
तेरी ईजू पालड़ी घास जै रैछ  
घास काटि ल्याळी, फिरि दुदूदू पिलालि  
तौलि में भात खा ले  
नौला को पानि पिले  
गुदड़ी में पड़ि रैले  
हल्लोरि बाला हल्लोरि, हल्लोरि बाबा हल्लोरि।

घुघूति बासूति  
E-book

इस प्रसिद्ध लोरी में पहाड़ी महिलाओं की कठिन दिनचर्या की झलक भी मिलती है।

<https://tinyurl.com/vqfx9ol>



काबुड़ी कब्बा छ,  
डाला में भव्वा छ।  
उक्खल में पिन्ना छ,  
देली में आमा छ।  
देखिये आमा बालो,  
कब्बा पिन्ना खालो।

बुधूति वासूति  
E-book

आँगन में ओरवल कूटने और साथ ही पालने में सोए हुए छोटे बच्चे  
की देखभाल करने का वर्णन।



3

## लोटी

हा चड़ि हा, हा चड़ि हा  
ताल गाड़ा ग्यूं पाक्या, माल गाड़ा जौं पाक्या  
बीच में मंसूर पाक्या  
हा चड़ि हा, हा चड़ि हा  
ठुल रुख बेडू पाक्यो, चड़ि ले सबै चाख्यो  
हा चड़ि हा, हा चड़ि हा

घुण्णुनि वास्तुति  
E-book

छोटी सी कहानी के माध्यम से गांव के परिवेश और खेती-बाड़ी का सुन्दर चित्रण।



लोरी

4

कौ लाटा काथ,  
सुण काला तू  
स्यूँड़ हैरे गौ,  
खोज कांणा तू  
अनाड़ी ले चौरि करि,  
दौड़ डुना तू  
निन्नी को बखत एगा,  
सै बाला तू

घुघूति वास्तुति  
E-book

हार्द्य का पुट लिए हुए एक छोटी सी कहानी पिरोई गई है इस लोरी में।





20-11-17

Vasishtha

लोरी

5

बड़-बड़ नाकिक, जन बसो माकिख  
बड़-बड़ पाकिक, सोज्या में राकिख  
एगे पोथु कि काकिख, लागलि काकिख  
बड़ बड़ नाकिक, जन बसो माकिख

घुघूति वास्तुति  
E-book

लाड -प्यार से भरी हुई सुन्दर लोरी ।



VASUDHA  
PAHT



Hem  
Mam



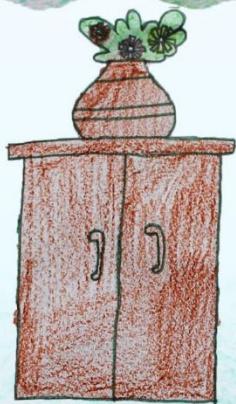
6

## लोरी

ओ मेरि देवरानि बालो देखि दिए  
हालो री बाला हालो री  
धान गोड़न जांछू, बालो मरि जांछ  
हालो री बाला हालो री  
ओ मेरि जेठानि बालो देखि ल्यूलो  
हालो री बाला हालो री  
ओ मेरि देवरानि जी र्ये जागि र्ये  
हालो री बाला हालो री  
फुलि जाए फलि जाए, जी र्ये जागि र्ये ।  
हालो री बाला हालो री

घुण्ठति बासूति  
E-book

देवरानी-जेठानी के बीच प्रेम भरा संवाद ।



लोरी

7

भौ की निनुरी ये जाली, चुप-चुप आंखी भै जाली  
फूल दिसाण छजै जाली, दू-दू भाति खै जाली!

मुसी खटपट झन करिए, माखी भिन-भिन झन करिए!  
घुघूती घू-घू झन करिए, कोयल कू-कू झन करिए!

कुकुर हूं-हूं झन करिए, बिराऊ म्यांऊ म्यांऊ झन करिए!  
बाकरी मैं मैं झन करिए, सुवा टे-टे झन करिये!

बाढ़ी हम्मे झन करिए, भैंसी बाई झन करिए!  
दातुली छणमाण झन करिए, तौली डीनमिन झन करिए

कसनि तू मुख झन पड़िये, डाढ़ू तू माठु माठु रड़ीए!  
बड़ बजियु की हवाक सुनिए, हलकी भै गुड़घुड़ करिए!



## पर्वीत 1

“ फूलदेई छम्मा दई, दैंणी द्वार भर भकार  
 तुमार भकार भरीजो, हमार टुपार  
 फूलदेई छम्मा दई, जतुके ढिघा उतुके सही  
 फूलदेई छम्मा दई, दैंणी द्वार भर भकार  
 त्वै दई कैं बार-बार नमस्कार ”



## पर्वीत २

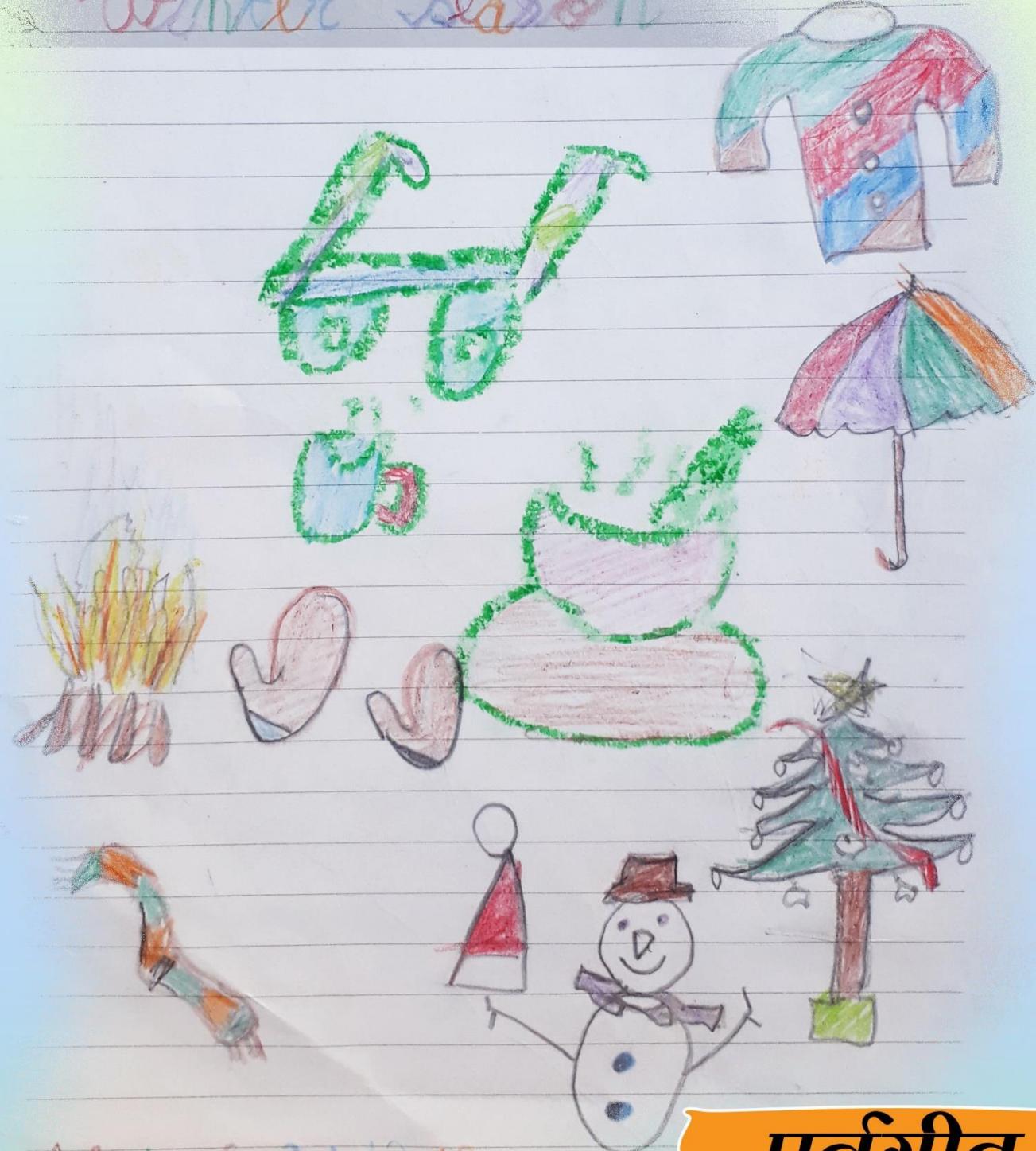
काले कव्वा काले, घुघुतिक माला खाले  
काले कव्वा का का, पूस कि रोटी माघे खा  
काले कव्वा आ जा, लगड़ पूरी खा जा  
ले कव्वा बड़ो, मैं कैं दिए सुनाक घड़ो  
ले कव्वा ढाल, मैं कैं दिए सुनाकि थाल  
ले कव्वा तलवार, मैं कैं दिए भलो भलो घरबार

घुघुति बासूति  
E-book

मकर संक्रांति पर्व पर बच्चे आटे से बने मीठे पकवानों की माला गले में पहनते हैं और इस गीत को गाते हुए कव्वे को पकवान खाने के लिए बुलाते हैं।



Winter Season



19.12.19

पर्वीत 3

फूलदेर्इक छापड़, खतडुवा क काकड़  
घुतिक भाव, उतरेनिक काव  
बसंत पंचमिक जौं, सोनोक हर्याव  
बगवाइक च्यूड़, चौतोक आव  
त्यारोक घ्यूं, आब कि कूं

घुघूति वासूति

E-book

इस गीत में उत्तराखण्ड के विभिन्न पारम्परिक लोकपर्वों का उल्लेख है।



Ghuguti Basuti

Meenakshi

04 - 04 - 2020

## कीड़ागीत 1

घुघूति बासूति  
आमा कां छ ?  
खेत में छ  
कि करन रे छ ?  
घास काटन रे छ  
घास को खालो ?  
गोरु बाच्छी खालि  
गोरु दुद्दू दे लो  
भव्वा उक्के पि लो

घुघूति बासूति  
E-book

बच्चे को पीठ या लेटकर पैरों में झुलाते हुए यह गीत गाया जाता है।

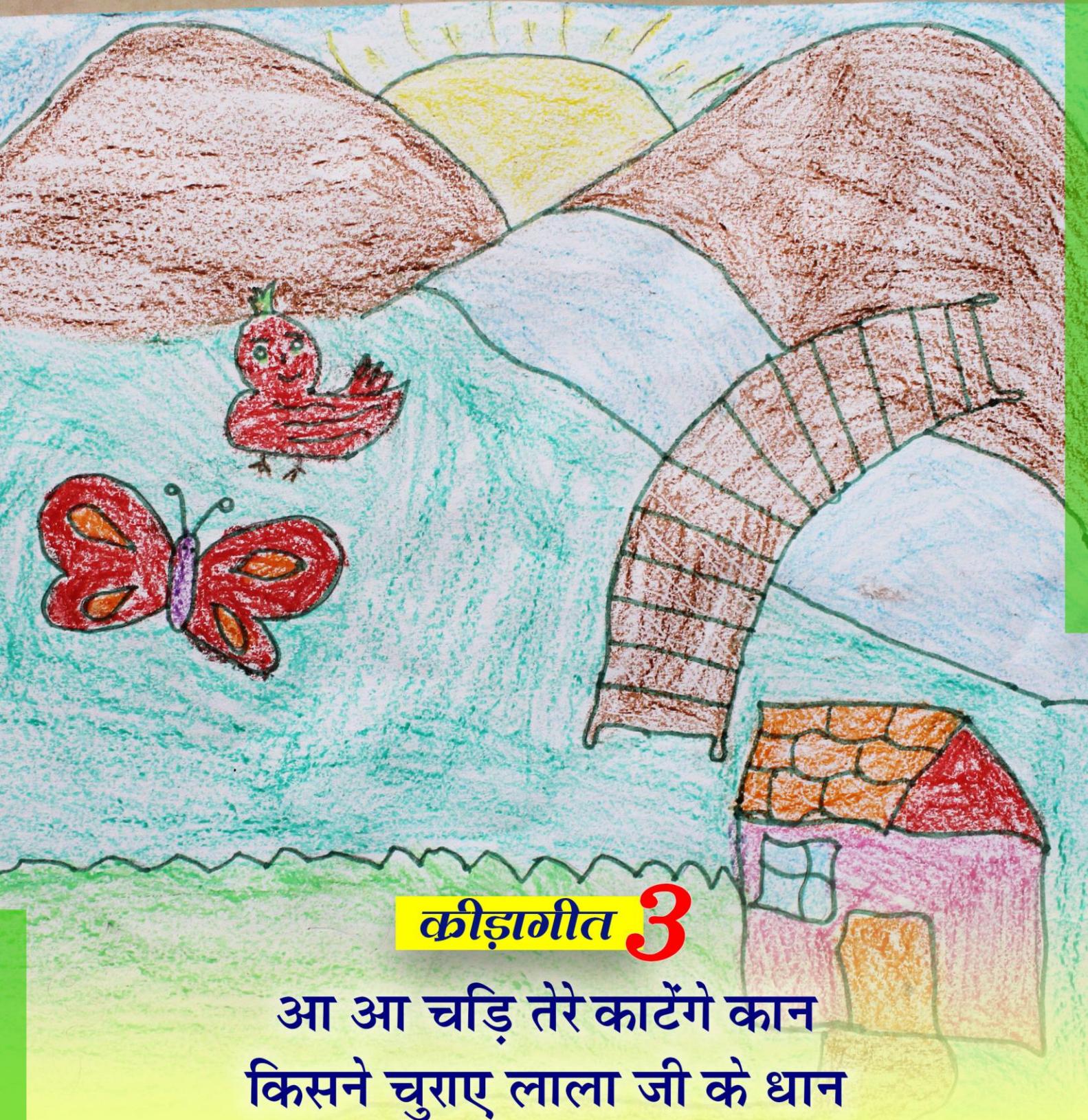


## कीड़ागीत 2

धनपुतली धान दे, कौवा खा छी कान दे  
धनपुतली दान दे, सुप्पा भरी धान दे  
तेरी बरियात पछिल देखुंल, बरखा ऐंगे जांण

घुघूति वारदाति  
E-book

जमीन से निकलती हुई धनपुतली (Flying Ants) देरवकर बच्चे  
जिज्ञासापूर्वक यह गीत गाते हैं।



## कीड़ागीत 3

आ आ चड़ि तेरे काटेंगे कान  
किसने चुराए लाला जी के धान  
खाई-पीई चड़ि मोटी बनी  
ताल गाड़ा, माल गाड़ा, घर को गई  
चड़ि चूं चूं, मुसि चूं चूं  
धान मंडुवा तूने खाया, कपड़ा काटा क्यों?

धृष्टि वास्ति  
E-book

हिन्दी-कुमाऊँनी मिश्रित भाषा युक्त यह गीत बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाता है।



## कीड़ागीत 4

च्यूं मुसि च्यूं  
द्वी दाना ग्युं  
घट पिसी ल्यूं  
कि त्वै द्यूं  
कि मैं खूँ ?

बुधूति बासूति  
E-book

---

दो या अधिक बच्चे एक दूसरे की हथेलियों के पिछले हिस्से पर चिंगोटी काटते हुए<sup>16</sup>  
यह गीत गाते हैं।



## कीड़ागीत 5

बरखा दीदी इथकै आ, घाम भिना उथकै जा  
घामपानि-घामपानि स्यालोक ब्या  
कुकुर बिरालु बरियाती ग्या  
मैं थे कुनान दच्छना ल्या।

घुघूति वास्तुति  
E-book

बारिश में भीगते हुए आनंद से भरकर बच्चे इस गीत को गाते हैं।

# कीड़ागीत 6



खेल दरी, दरी का दरी  
दरी न्है गे हिमाल दरी

को दरी बिछालो दरी, म्यार बाज्यू बिछाला दरी

को दरी बैठोलो दरी, म्येरि ईजू बिछाला दरी

खेल दरी, दरी का दरी  
दरी न्है गे हिमाल दरी

गोल घेरा बनाकर सामूहिक नृत्य के साथ गाया जाने वाला गीत।

# कीड़ागीत 7

काँस काटो, बाँस काटो  
खिन्न काटो मैदान  
रियूंनी चेलि मिले मांगि  
तब मैं बन्यु पधान

घुघूति वासूति  
E-book

बालिकाओं-किशोरियों द्वारा गाया जाने वाला सामूहिक नृत्यगीत।

Dated : / /

## कीड़ागीत 8

छक-छक छापरि मोत्यूं का दाणा  
पारि बटि आयो कुमख्या राणा  
कुमख्या ले मिकैं धान दी  
धान मीं ल ऊखल कैं दी  
ऊखल ल मिकैं चावल दी  
चावल मीं ल तौलि कैं दी  
तौलि ल मिकैं भात दी

घुघूति वासूति  
E-book

अनाज की यात्रा, खेत से रसोई और फिर हमारी थाली तक।

VATSAL



SHOP



## कीड़ागीत 9

अटकन बटकन दही चटकन

बन फूले बनवारी फूले

दाता जी का झुल्ला झूले

आँड़ मोँड़ दैनि हत्थि तोँड़

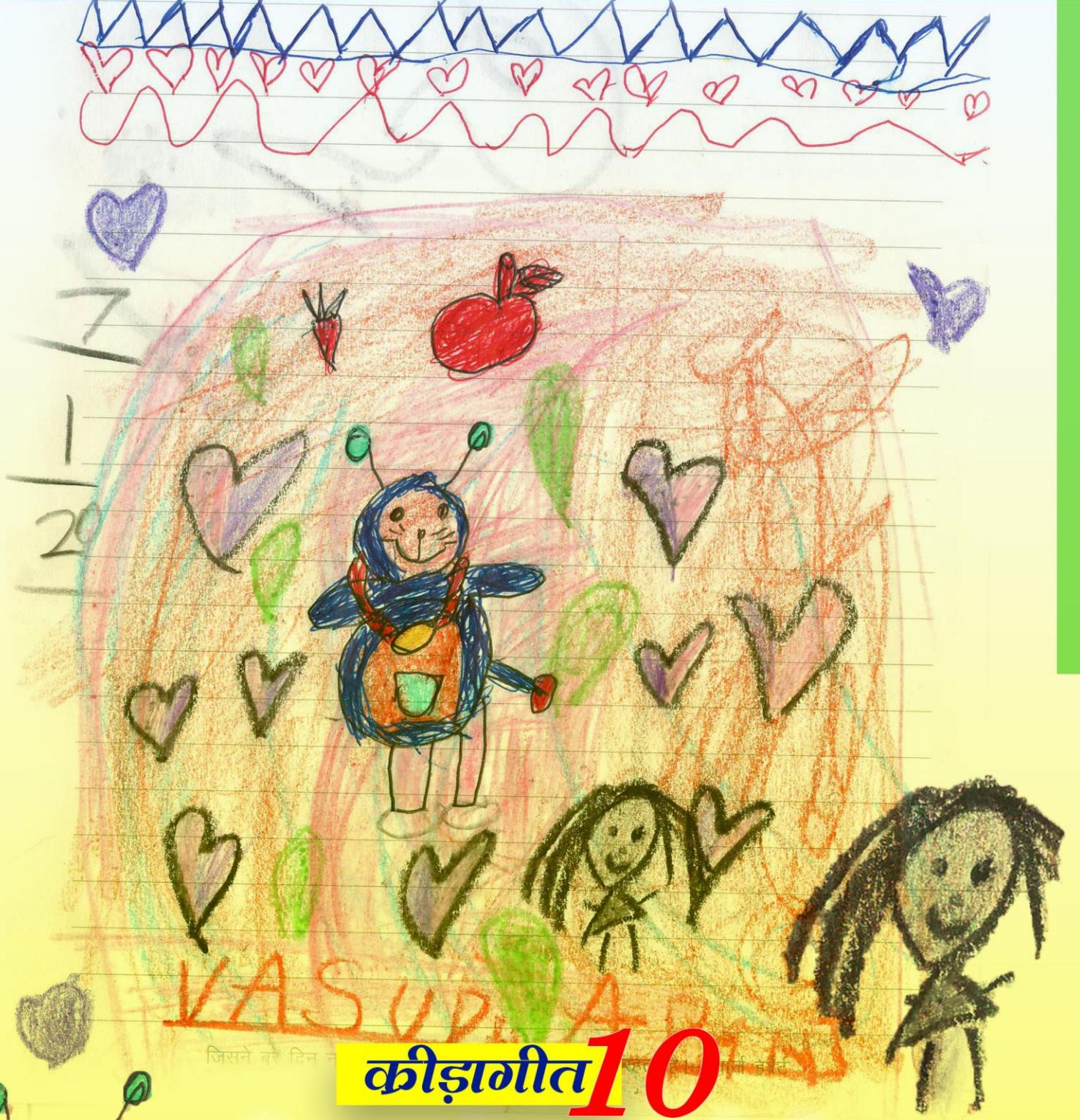
बरखा लागि झमाझम, बुँड़ भाजि बन बन

लै बुढ़ी खाजा, त्येर गोरु भाजा

घुण्ठि वासूनि  
E-book

बच्चों का पसंदीदा शरारत भरा गीत।

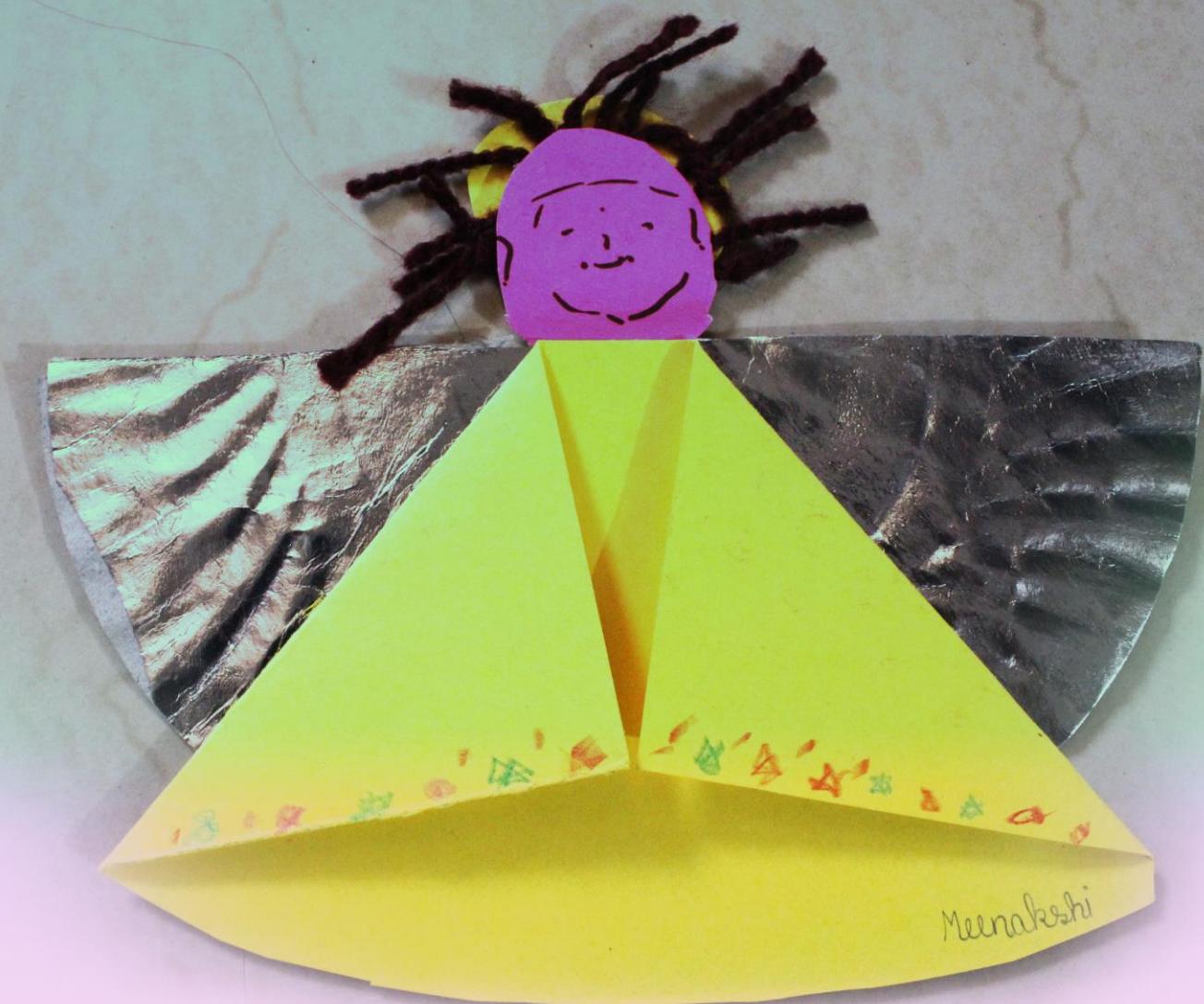




# VASUD कीड़ागीत 10

उड़कुच्चि मुड़कुच्चि दाम दलेच्ची  
लड्यां लैंची पीतल कैंची  
ओड़ कि चेलिया कसि कसि छैन  
बिंद्राबन में खेलनि खेल  
ओड़ मोड़ दुई हाति॒य तोड़

उत्साह से भरा सामूहिक नृत्यगीत।



## कीड़ागति 11

ल्वार ल मिकैं दरांति दी  
दरांति मैं ल घसियारी के दी  
घसियारी ल मिकैं घास दी  
घास मैं ल गोरु कैं दी  
गोरु ल मिकैं दूध दी

घुघूति वासूति  
E-book

पशुपालन प्रक्रिया की साधारण शब्दों में अभिव्यक्ति।

# ਕੀਡਾਗੀਤ 12



ਪਾਰਿਪਾਤਲ ਬਾਘ ਭੇਟਿ  
 ਬਾਘਲ ਮੈਂ ਹੈ, ਠੌੰਨ ਦੀ  
 ਠੌੰਨ ਮੈਲ, ਚੀਲ ਥੈਂ ਦੀ  
 ਚੀਲੇਲ ਮੈਂ ਹੈ, ਪਰਵਾਨ ਦੀ  
 ਪਰਵਾਨ ਮੈਲ, ਲਵਾਰ ਥੈਂ ਦੀ  
 ਲਵਾਰਲ ਮੈਂਹੈ, ਸ਼੍ਵੀਡੁ ਦੀ  
 ਸ਼੍ਵੀਡੁ ਮੈਲ, ਢੋਲਿ ਥੈਂ ਦੀ  
 ਢੋਲਿਲ ਮੈਂਹੈ, ਬੁਟੁਵਾ ਦੀ  
 ਬੁਟੁਵਾ ਮੈਲ, ਓਰਖਲ ਕੁਟੁਵਾ ਥੈਂ ਦੀ  
 ਓਰਖਲ ਕੁਟੁਵਾ ਲੇ ਮੈਂਹੈ, ਖਾਜਾ ਦੀ  
 ਖਾਜਾ ਮੈਲ ਜਵਾਲਾ ਥੈਂ ਦੀ  
 ਜਵਾਲਾਲ ਮੈਂਹੈ, ਦਾਂਧੁਲਿ ਦੀ  
 ਦਾਂਧੁਲਿਲ ਮੈਲ, ਘਾਸ ਕਾਟੀ

ਘਾਸ ਮੈਲ, ਗੋਰੂ ਥੈਂ ਦੀ  
 ਗੋਰੁਲ ਮੈਂਹੈ, ਦੂਧ ਦੀ  
 ਦੂਧ ਮੈਲ, ਠੇਕੀਨ ਘਾਲਿ  
 ਠਕਕੀਲ ਮੈਂਹੈ, ਦੈ ਦੀ  
 ਦੈ ਮੈਲ, ਨਨਿਧਾਨ ਘਾਲਿ  
 ਨਨਿਧਾਨਲ ਮੈਂਕੇ, ਨੌਨਿ ਦੀ  
 ਨੌਨਿ ਮੈਲ, ਭਦਲਿਆ ਨ ਘਾਲਿ  
 ਭਦਲਿਆਲ ਮੈਂਕੇ, ਛੂ ਦੀ  
 ਛੂ ਮੈਲ, ਰਾਜਾ ਥੈਂ ਦੀ | ਘੁਘੂਤਿ ਬਾਸੂਤਿ  
 ਰਾਜਾਲ ਮੈਂਹੈ, ਘਾਡੁ ਦੀ E-book  
 ਘਾਡੁ ਮੈਂ ਮੈਂ ਚਢਿ ਜੌਲਾ  
 ਰਿਚਡਿ ਭਾਤ ਖਵੌਲਾ



ਜੀਹਾਰੀ ਬੋਲੀ ਕਾ ਗੀਤ : ਸਾਮਾਜਿਕ ਪਰਿਵੇਸ਼ ਔਰ ਪਸ਼ੁਪਾਲਨ ਕੀ ਮਹਤਵਪੂਰਣ ਜਾਨਕਾਰੀ।

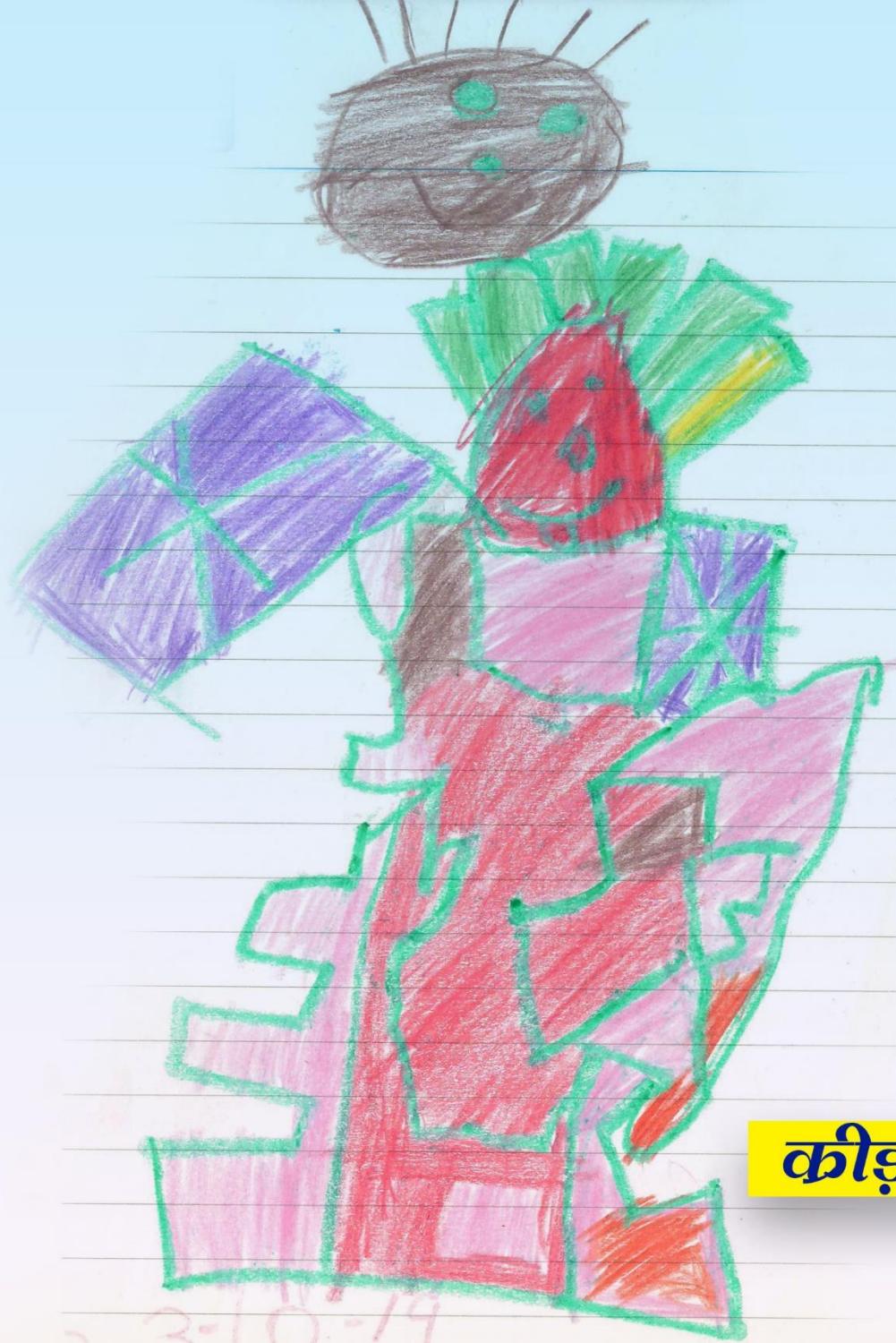


कीड़ामीत 13

पारि पातल मामि भेटि  
मामि हाथ तामि छी  
तामि भरि चूख छी  
चूख धैं चाढँ, मामि धैं भेटुं

घुघूति बासूति  
E-book

जोहारी बोली का गीत : पत्थर की गोटियों से गिटू खेलते हुए गाया जाता है।



कीड़ागीत 14

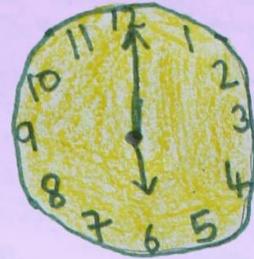
7-3-10-19

वखड़ दाना खरे-बरे  
निमुवा दाना रस  
रस बल्दक कुड़ा निभै  
उच्च ढुंग मां बस

घुघृति वास्तुनि  
E-book



जोहारी बोली का गीत : पत्थर की गोटियों से गिटू खेलते हुए गाया जाता है।



# पढ़ाई-लिखाई 1

एक बजे इकतारा  
दो बजे द्वारिकानाथ  
तीन बजे त्रिलोकीनाथ  
चार बजे तो चारधाम  
पांच बजे परमेश्वर नाम  
छे बजे छबीले श्याम  
सात बजे सुंदर नाम  
आठ बजे आठों याम  
नौ बजे नमो नारायण  
दस बजे दामोदर नाम

घुघूति बासूति  
E-book

अंकों के साथ बच्चों का पहला परिचय।

ਬਾਠਿ ਰੇ ਬਾਠੀ !  
 ਬਾਮਣੁੰਕ ਬਾਠੀ !  
 ਤਿਤਿ ਕਹੀਂਲ !  
 ਚਾਰ ਵੇ ਚਾਨਾ !  
 ਪਾਂਚ ਨੇ ਪਾਨਾ !  
 ਥਾਂ ਛਟਾਂਗੀ !  
 ਸਾਤ ਸਤਿਆਲਅ !  
 ਆਠ ਅਨਿਆਲਅ !  
 ਨੌ ਕੋ ਨਾਗਨ !  
 ਦਸ ਕਾ ਫਾਗਨ !  
 ਜਧਾਰ ਮੇਰੇ ਭਾਈ !  
 ਬਾਰ ਬਾਗਵਾਈ !  
 ਤੇਰਅ ਕੋ ਮਡ੍ਹੂ !  
 ਚੌਂਦ ਚਮੇਲੀ !  
 ਪਨਦਰ ਪਰਮੇਸ਼ਵਰ !  
 ਸੋਲਹ ਮੇਂ ਬਾਜੀ ਠਨ !  
 ਰੇ ਠਨਾ ਠਨ !

# ਪਢਾਈ-ਲਿਖਾਈ 3

ਅ ਆ ਬਚਿ ਕਾ  
ਇ ਈ ਬਚੁਲਿ ਦੀ  
ਤ ਊ ਪਰਿਆ ਬੂ  
ਏ ਏ ਮਾਟਾਕਿ ਡੱਡ  
ਓ ਔ ਗੁਡਕਿ ਡਊ  
ਅਂ ਅ: ਸ਼ਕੂਲਕ ਥੰ ਜਲਦੀ ਓ

ਘੁੜੂਤਿ ਵਾਸੂਤਿ  
E-book

ਬਚਿਆਂ ਕੋ ਅਕਥਾਂ ਦੇ ਪਰਿਚਿਤ ਕਰਾਨੇ ਦਾ ਗੀਤ।



## पढ़ाई-लिखाई 4

Vatsal 27.1.20

तितुर चारखुड़, मुस-भ्याकुड़, पिरोड़ी-घिनोड़ी  
 म्यार मुलुक चार करनि, उड़नी दौड़ी-दौड़ी  
 गड़मौलिया, लम्पुछड़ि, टिपराई, करौल  
 जोड़ी में घुघुत बासनि, दांग में सिरौल

घुघूति वासूति  
E-book

विभिन्न पक्षियों के नाम ( लेवक - बालम सिंह जनौटी )

# ਪਹੇਲਿਆਂ (ਆਣ)

1

ਅਲੰਗੇ ਰਾਨਿ ਪਲੰਗ ਬਿਠਾ  
ਸੂਰਜ ਆਯੋ ਝਾਪਕੇ ਲੀਜਾ

8

ਲਾਲ ਚਡ਼ਿ ਬਟਨਦਾਰ  
ਵੀਕ ਚਾਲ ਨੌ ਹਜਾਰ

2

ਟਨਟਨ ਤਬਲੰਗ ਦਿਨਿਆ ਮੇਂ ਖ਼ਬਰ ਨਿ,  
ਏਕ ਫਲ ਮੈਂ ਲ ਪਾਯੋ, ਤਠਿਲ ਨੇ ਗੁਠਿਲ

9

ਹਿਟਣ ਮੇਂ ਸੁਰਸ਼ਤ, ਦੇਰਖਣ ਮੇਂ ਕਾਵ,  
ਚੌਮਾਸ ਮੇਂ ਦੇਰਖਿਂਛ, ਖਾਂਣ ਮੇਂ ਛਾਵ।

3

ਏਕ ਨਾਨਿ ਨਾਨਿ ਛੋਰਿ  
ਪੁਰ ਪਰਿਵਾਰ ਕੋਂ ਰੁਲੁਛਿ

10

ਥਾਲੀ ਭਰੀ ਮੋਤਿਧੀਂ ਕਿ  
ਕੋ ਗਣਿਂ ਸਕੂਂਛ

4

ਛਾਂ ਕਰ ਸ਼ਾਂ ਕਰ  
ਮਿ ਨਿ ਤ ਕਥਾ ਕਰ

11

ਤੁ ਹਿਟ  
ਮੀ ਏਣਹੁਂ

ਬੁਧੂਤਿ ਬਾਸੂਨਿ  
E-book

5

ਤੂ ਮੇਰਿ ਟੋਪਿ ਖਾਲੇ  
ਮੈਂ ਤੇਰਿ ਲੋਤਿ ਖੂਲ

12

ਔੰਣੀਲ ਖਾਇ, ਪੌੰਣੀਲ ਖਾਇ  
ਕਮੁ ਡੇਲ ਬਕਾਇ ਰਹ।

6

ਬਾਲਾਪਨ ਮੇਂ ਹਰੋ ਭਹਾਂ, ਜਵਾਨੀ ਮੇਂ ਲਾਲ  
ਬੂਢਾਪਨ ਮੇਂ ਕਾਲੋ ਭਹਾਂ, ਕਰੋ ਪੱਚ ਵਿਚਾਰ

13

ਖ੍ਰੀਲਿ ਸਿਕਾਡੁ ਟੋਡਿ ਨੈ ਸਕਿਨ,  
ਝਲਲ੍ਹ ਬਲਟ ਬੈ ਨੈ ਸਕਿਨ।

7

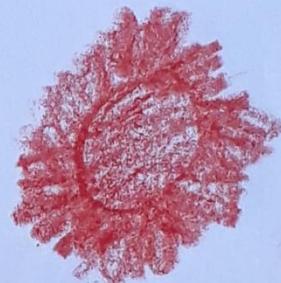
ਲਾਗ ਲਾਗ ਕੂਣ ਮੇਂ ਨਿ ਲਾਗਣ  
ਬਿਲਾਗ ਕੂਣ ਮੇਂ ਲਾਗਿ ਜਾਂ

14

ਅਧਿਲ ਸੁਕਿਲ  
ਪਾਹਿਲ ਬੇ ਮੈਲ

10. ਜਾਕਾ ਫੁ ਫੁ ਚਾਹ । 11. ਚੁਲ੍ਹੇ ਪ੍ਰੇ ਪ੍ਰੇ ਚੁਲ੍ਹੇ । 12. ਚੁਲ੍ਹੇ ਚੁਲ੍ਹੇ ਪ੍ਰੇ ਪ੍ਰੇ । 13. ਚੁਲ੍ਹੇ ਪ੍ਰੇ ਪ੍ਰੇ ਚੁਲ੍ਹੇ । 14. ਹੈਂਡੀ

1. ਹੈਂਡੀ 2. ਚੁਲ੍ਹੇ 3. ਪ੍ਰੇ 4. ਪ੍ਰੇ 5. ਚੁਲ੍ਹੇ 6. ਚੁਲ੍ਹੇ 7. ਚੁਲ੍ਹੇ 8. ਚੁਲ੍ਹੇ 9. ਚੁਲ੍ਹੇ



## आशीर्वचन



“ जी रहे जागि रहे, यौं दिन यौं मास भेटने रहे  
धरती जस चकव है जाये, आकाश जस उच्च है जाये  
दुबैक जस जड़ है जो, पातिक जस पौव है जो | घुघूति बायूति  
सूरजक जस तराण है जो, स्यावैक जस बुद्धि है जो E-book  
सिल पिसी भात खाये, जाँठि टेकि झाड़ जाये ”

दुतिया, हरेला एवं अन्य पर्वों पर घर के बड़े लोगों द्वारा बच्चों को सुख-समृद्धि  
और दीर्घजीवी होने के आशीर्वचन इन शब्दों के साथ दिए जाते हैं।